YOJANASEWA.COM

https://yojanasewa.com

MAIN NEWS HEADLINE हरिशंकर परसाई एक लेखक जिसने व्यंग्य की कलम से सम

विषय सूची (Table of Contents):

>> हरिशंकर परसाई का व्यंग्य जहां हंसी के पीछे छिपी है समाज की कड़वी सच्चाई...

>> शुरुआती जीवन और संघर्ष 1947 में नौकरी छोड़कर स्वतंत्र लेखन का जोखिम भरा फैसला...

>> वसुधा पत्रिका और साहित्यिक मंच का निर्माण...

>> हिंदी साहित्य में क्रांति जब परसाई ने बदल दिए व्यंग्य के मायने...

>> हास्य और व्यंग्य का स्पष्ट अंतर...

>> व्यक्ति नहीं, मानसिकता पर प्रहार भ्रष्टाचार, अंधविश्वास और राजनीतिक स्वार्थ की ...

>> अंधविश्वास और पाखंड के विरुद्ध संघर्ष...

>> भोलाराम का जीव और इंस्पेक्टर मातादीन सरकारी और पुलिस व्यवस्था पर करारी चोट...

>> प्रमुख कृतियों की सूची और उनका संदेश...

>> मध्यमवर्गीय जीवन का आईना वो रचनाएं जिनमें हमें अपना ही चेहरा नजर आता है...

>> सरल भाषा और मारक प्रभाव आम आदमी से सीधे जुड़ने वाला परसाई का साहित्य...

>> परसाई की भाषा शैली की मुख्य विशेषताएं...

>> परसाई से पूछें अखबार के कॉलम से समाज और राजनीति पर बेबाक विमर्श...

>> निष्कर्ष आज के दौर में परसाई के साहित्य की प्रासंगिकता...

>> अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न...

हरिशंकर परसाई का व्यंग्य: जहां हंसी के पीछे छिपी है समाज की

जब आप कोई मनोरंजक रचना पढ़ते हैं और चेहरे पर सहज मुस्कान आ जाती है, लेकिन कुछ ही पलों बाद महसूस होता है कि लेखक मजाक नहीं कर रहा, बल्कि समाज की नग्न सच्चाई सामने रख रहा है यही हरिशंकर परसाई के लेखन का जादू है। उनकी पंक्तियों में सबसे ज्यादा चुभने वाली बात यह होती है कि व्यवस्था के उस बिगड़े आईने में हम खुद को भी खड़ा पाते हैं।

हिंदी साहित्य में व्यंग्य को केवल गुदगुदाने या फूहड़ हास्य के दायरे से बाहर निकालकर सामाजिक चेतना का हथियार बनाने का श्रेय हरिशंकर परसाई को जाता है। उनका स्पष्ट मानना था कि व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है और व्यवस्था की विसंगतियों को बेपर्दा करता है। उन्होंने जीवन भर पाखंड, अंधविश्वास और शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ अपनी तीखी कलम चलाई।

साहित्य प्रेमियों और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए परसाई का साहित्य आज भी अनिवार्य विषय है। यदि आप समकालीन साहित्य और रोचक विश्लेषण कीlatest updateखोज रहे हैं, तो परसाई के विचार आपको हर दौर में प्रासंगिक

नजर आएंगे। इस संदर्भ में आप हमारी विशेष रिपोर्टMAIN NEWS HEADLINE: भारत में जिसकी पूछ नहीं, वो इंग्लैंड में मचा रहा गभी पढ़ सकते हैं।

शुरुआती जीवन और संघर्ष: 1947 में नौकरी छोड़कर स्वतंत्र लेखन

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त 1924 को मध्य प्रदेश के जमानी गांव में हुआ था। उनका जीवन केवल साहित्यिक गोष्ठियों और किताबों तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने जमीनी स्तर पर कड़ा संघर्ष देखा था। महज 18 वर्ष की आयु में उन्होंने वन विभाग में सेवा दी और फिर अध्यापन कार्य से जुड़े।

उन्होंने खंडवा में अध्यापन किया, जबलपुर से शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किया और निजी विद्यालयों में भी पढ़ाया। लेकिन उनका ध्येय केवल एक बंधी-बंधाई नौकरी करना नहीं था। वर्ष 1947 में जब देश आजाद हुआ, तब उन्होंने एक बेहद साहसिक और जोखिम भरा निर्णय लेते हुए अपनी नियमित सरकारी नौकरी छोड़ दी और पूर्णकालिक स्वतंत्र लेखन को जीवन का आधार बनाया।

वसुधा पत्रिका और साहित्यिक मंच का निर्माण

आजादी के दौर में बिना किसी बंधी आय के स्वतंत्र लेखन चुनना आर्थिक दृष्टि से अत्यंत कठिन था। परसाई जी ने जबलपुर से वसुधा नामक साहित्यिक पत्रिका का संपादन और प्रकाशन शुरू किया।

>> स्वतंत्र मंच की स्थापना: वसुधा के माध्यम से उन्होंने प्रगतिशील और निर्भीक लेखकों को एक सशक्त मंच दिया।

>> आर्थिक चुनौतियां:पत्रिका के संचालन में भारी आर्थिक घाटा सहने के बावजूद उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।

>> साहित्यिक विस्तार:वे केवल रचनाकार नहीं थे, बल्कि नए विचारों और युवा लेखकों के लिए साहित्यिक जमीन तैयार करने वाले मार्गदर्शक थे।

हिंदी साहित्य में क्रांति: जब परसाई ने बदल दिए व्यंग्य के मा

परसाई जी से पहले हिंदी साहित्य में व्यंग्य को अक्सर एक हल्की-फुल्की विधा माना जाता था, जिसका काम सिर्फ पाठकों का मनोरंजन करना था। परसाई ने इस धारणा को जड़ से बदल दिया। उन्होंने सिद्ध किया कि हंसी भी सत्ता और समाज से कड़े सवाल पूछ सकती है।

उनकी लेखनी ने यह स्थापित किया कि व्यंग्य कोई क्षणिक विनोद नहीं, बल्कि सामाजिक विद्रूपताओं के विरुद्ध एक गंभीर बौद्धिक और नैतिक संघर्ष है। एक साधारण सी घटना या किस्सा उनके हाथों में आकर पूरी व्यवस्था की पोल खोलने वाला दस्तावेज बन जाता था।

हास्य और व्यंग्य का स्पष्ट अंतर

परसाई के लेखन ने हास्य (Humor) और व्यंग्य (Satire) की सीमा रेखा को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया:

>> हास्य:पाठक को गुदगुदाता है और तनाव मुक्त करता है।

>> व्यंग्य:पाठक को हंसाते हुए बेचैन करता है और सोचने पर मजबूर करता है।

>> सामाजिक जिम्मेदारी:व्यंग्य का मुख्य लक्ष्य समाज के पाखंड और संस्थागत भ्रष्टाचार पर प्रहार करना है।

व्यक्ति नहीं, मानसिकता पर प्रहार: भ्रष्टाचार, अंधविश्वास और

परसाई जी के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे किसी एक व्यक्ति को निशाना बनाकर अपनी बात समाप्त नहीं करते थे। वे व्यक्ति के माध्यम से उस समूची भ्रष्ट मानसिकता पर हमला करते थे जो अव्यवस्था को जन्म देती है।

यदि समाज में कोई व्यक्ति रिश्वत लेता था, तो परसाई का सवाल केवल उस रिश्वतखोर तक सीमित नहीं था उनका वार उस सामाजिक और आर्थिक ढांचे पर था जो भ्रष्टाचार को सामान्य बना देता है। राजनीतिक अवसरवाद के पीछे छिपे स्वार्थों को उन्होंने अत्यंत बारीकी से उजागर किया।

अंधविश्वास और पाखंड के विरुद्ध संघर्ष

समाज में व्याप्त रूढ़ियों पर प्रहार करते हुए उन्होंने लिखा कि वैज्ञानिक सोच का ढोंग करने वाला समाज जब अंधविश्वास की शरण में जाता है, तो वह बौद्धिक रूप से पंगु हो जाता है। उनके पात्र समय की सीमाओं से परे मानवीय प्रवृत्तियों का शाश्वत प्रतिनिधित्व करते हैं।

ज्ञान और विज्ञान की ऐसी ही अनूठी दुनिया को समझने के लिए आप हमारी दिलचस्प रिपोर्टनॉर्वे का रहस्य: यहाँ 6 महीने तक क्यों नहीं डूबता सूरज? जानिए सचभी देख सकते हैं।

भोलाराम का जीव और इंस्पेक्टर मातादीन : सरकारी और पुलिस व्य

हरिशंकर परसाई की कालजयी रचनाओं में भोलाराम का जीव शीर्ष पर आती है। इस कहानी में एक सामान्य सेवानिवृत्त कर्मचारी की पेंशन की फाइल सरकारी दफ्तरों के चक्रव्यूह में फंसी रहती है। मृत्यु के बाद भी भोलाराम का जीव स्वर्ग न जाकर उसी पेंशन की फाइल में अटका रहता है।

यह रचना हास्य के आवरण में उस संवेदनहीन लालफीताशाही का क्रूर चेहरा दिखाती है, जहाँ जीवित इंसान की सांसों से ज्यादा कीमत

सरकारी फाइलों और घूस के कागजों की होती है।

प्रमुख कृतियों की सूची और उनका संदेश

>> इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर:पुलिसिया कार्यप्रणाली, झूठे गवाह बनाने की प्रवृत्ति और न्याय व्यवस्था की विडंबना का अद्भुत चित्रण।

>> ठिठुरता हुआ गणतंत्र:गणतंत्र के बड़े-बड़े दावों और जमीनी हकीकत के बीच के अंतर पर तीखा प्रहार।

>> प्रेमचंद के फटे जूते:दिखावे की संस्कृति, आडंबर और यथार्थवादी जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

>> विकलांग श्रद्धा का दौर:समाज में धर्म, श्रद्धा और अंधभक्ति के नाम पर फलने-फूलने वाले पाखंड का विश्लेषण।

मध्यमवर्गीय जीवन का आईना: वो रचनाएं जिनमें हमें अपना ही चेहर

परसाई जी का साहित्य आम मध्यमवर्गीय परिवार की विविशताओं और उसके दोहरे चरित्र को बखूबी उजागर करता है। उनका पाठक जब उनकी रचनाएं पढ़ता है, तो उसे लगता है कि यह तो उसी के पड़ोस या उसके खुद के घर की कहानी है।

वह मध्यमवर्गीय व्यक्ति जो महीने की पहली तारीख को बड़े सपने देखता है और महीने के अंत में पाई-पाई का हिसाब लगाता है, परसाई की रचनाओं का प्रमुख नायक है। वह व्यक्ति जो चाय की दुकान पर बैठकर भ्रष्टाचार को कोसता है, लेकिन अपना छोटा सा काम निकलवाने के लिए उसी भ्रष्ट व्यवस्था के आगे नतमस्तक हो जाता है परसाई ने इस विरोधाभास को बेबाकी से पकड़ा।

दैनिक जीवन की व्यावहारिक जरूरतों और बजट प्रबंधन की तरह ही लोग आज ऑनलाइन विकल्पों का सहारा लेते हैं यदि आप उपयोगी घरेलू गैजेट्स पर ऑफर की list तलाश रहे हैं तो तेज आंधी में भी नहीं टूटेगा ये छाता! Amazon पर मची है लूट अवश्य पढ़ें।

सरल भाषा और मारक प्रभाव: आम आदमी से सीधे जुड़ने वाला परसाई क

परसाई जी की भाषा शैली में कोई बनावटी भारीपन या क्लिष्टता नहीं थी। वे बिल्कुल सहज, बोलचाल की हिंदुस्तानी भाषा में पाठकों से सीधा संवाद करते थे। उनके छोटे-छोटे वाक्य सीधे पाठक के अंतर्मन पर चोट करते थे।

कठिन से कठिन दार्शनिक और राजनीतिक मुद्दों को वे अत्यंत सरल शब्दों में प्रस्तुत कर देते थे। यही कारण है कि उनकी रचनाएं केवल साहित्य के शोधार्थियों और अकादमिक जगत तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि सामान्य जनमानस ने भी उन्हें बड़े चाव से पढ़ा।

परसाई की भाषा शैली की मुख्य विशेषताएं

>> सहज संवाद:पाठक से आमने-सामने बैठकर बात करने जैसी आत्मीय शैली।

>> सटीक मुहावरेदारी:आम जनजीवन के मुहावरों और प्रतीकों का प्रभावशाली प्रयोग।

>> गहरा कटाक्ष:सीधे उपदेश देने के बजाय विसंगति को सामने रखकर पाठक को निष्कर्ष तक पहुंचाना।

परसाई से पूछें : अखबार के कॉलम से समाज और राजनीति पर बेबाक व

समाचार पत्रों में उनका लोकप्रिय साप्ताहिक कॉलम परसाई से पूछें उनकी त्वरित बुद्धि और हाजिरजवाबी का अद्वितीय उदाहरण था। शुरुआत में पाठक इसमें सामान्य, फिल्मी या व्यक्तिगत जीवन से जुड़े हल्के प्रश्न पूछते थे।

धीरे-धीरे परसाई जी ने अपने उत्तरों की धार से इस कॉलम को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विमर्श का एक सशक्त मंच बना दिया। उनके बेबाक जवाब सत्ताधीशों और धर्माचार्यों दोनों को असहज कर देते थे। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित अनेक राष्ट्रीय सम्मान मिले, लेकिन उन्होंने कभी भी व्यवस्था से कड़े सवाल पूछना बंद नहीं किया।

निष्कर्ष: आज के दौर में परसाई के साहित्य की प्रासंगिकता

हरिशंकर परसाई भले ही आज हमारे बीच भौतिक रूप से उपस्थित न हों, लेकिन उनकी रचनाएं2026में भी उतनी ही प्रासंगिक और जीवंत हैं जितनी अपने समय में थीं। आज जब समाज में दिखावा, डिजिटल पाखंड और संस्थागत विसंगतियां और अधिक जटिल हो चुकी हैं, तब परसाई का व्यंग्य हमें आंखें खोलकर सच देखने की प्रेरणा देता है।

यदि आप हिंदी साहित्य के विद्यार्थी हैं और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अध्ययन सामग्री याPDFनोट्स की तलाश में हैं, तो परसाई के निबंध संग्रहों का अध्ययन आपके दृष्टिकोण को समृद्ध करेगा। आप आधिकारिक अकादमिक पोर्टल पर जाकर अपने सिलेबस काstatus checkकर सकते हैं और अध्ययन सामग्री के लिएapply onlineमोड में विभिन्न ई-लाइब्रेरी का उपयोग कर सकते हैं।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त 1924 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद (अब नर्मदापुरम) जिले के जमानी गांव में हुआ था।

परसाई जी ने वर्ष 1947 में अपनी नियमित सरकारी अध्यापन नौकरी छोड़कर पूरी तरह से स्वतंत्र लेखन का जोखिम भरा रास्ता चुना था।

उन्होंने जबलपुर से वसुधा नामक अत्यंत प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका का संपादन और प्रकाशन किया था।

भोलाराम का जीव सरकारी दफ्तरों में व्याप्त लालफीताशाही, रिश्वतखोरी और संवेदनहीन पेंशन व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करती

है।

उन्हें उनके प्रसिद्ध व्यंग्य संग्रह विकलांग श्रद्धा का दौर के लिए प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

समाचार पत्रों में उनका सवाल-जवाब आधारित कॉलम परसाई से पूछें पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय और चर्चित था।

उन्होंने व्यंग्य को केवल हास्य-विनोद के स्तर से उठाकर सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक विसंगतियों पर प्रहार करने वाली एक गंभीर साहित्यिक विधा का दर्जा दिलाया।

उनकी प्रमुख कृतियों में रानी नागफनी की कहानी , तट की खोज , भूत के पांव पीछे , सदाचार का ताबीज , शिकायत मुझे भी है और प्रेमचंद के फटे जूते शामिल हैं।